साहित्येतिहास - 2

DDE

Submitted By:
Dr. Mango Rani
Associate Professor
Directorate of Distance Education
Kurukshtra University
Kurukshetra - 132119

Programme
BA – General

Class III

Subject : Hindi

आदिकाल : नामकरण की समस्या

- **विभिन्न विद्वानों द्वारा आदिकाल के विभिन्न नाम–**
  - डॉ. ग्रियर्सन – 'चारणकाल'
  - मिश्रबन्धु – 'आरम्भिक काल'
  - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – 'वीरगाथा काल'
  - डॉ. रामकुमार वर्मा – 'सन्धिकाल' एवं 'चारणकाल'
  - डॉ. राहुल सांकृत्यायन – 'सिद्ध–सामन्तकाल'
  - आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी – 'बीजवपनकाल'
  - आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी – 'आदिकाल'
  - डॉ. गणपति चन्द्र गुप्त – 'प्रारम्भिक काल'

आदिकाल की परिस्थितियाँ

साहित्यकार का युगीन परिवेश से प्रभावित होना स्वाभाविक,
इसीलिए साहित्य युग की परिस्थितियों से प्रभावित होता है और
युग का दर्पण होता है।

1. राजनीतिक परिस्थितियाँ

- आदिकाल अव्यवस्था, अराजकता, पराजय और गृह कलह का काल।
- एक ओर विदेशी आक्रमण और दूसरी ओर राजाओं में पारस्परिक फूट।
- सम्राट **हर्ष**वर्धन (606–643 ई.) की मृत्यु के कारण उत्तरी भारत की केन्द्रीय सत्ता छिन्न–भिन्न ।
- 710–11 ई. में मुसलमानों द्वारा सिंध पर आक्रमण, दाहिर के अभद्र व्यवहार के कारण जाटों द्वारा आक्रमणकारियों का साथ दिया जाना, दाहिर का मारा जाना।
- आठवीं शताब्दी तक सिंध से कच्छ दक्षिणी मारवाड़, उज्जैन, उत्तरी गुजरात को **नष्ट** करके अरब सेनापति द्वारा दक्षिणी गुजरात में प्रवेश। वहां चालुक्य सेना द्वारा उनका सफाया।
- 9वीं शताब्दी में प्रतिहार मिहिरभोज द्वारा सत्ता सम्भालना।
- 10वीं शताब्दी में महमूद गजनवी के हाथ में शासन।

धार्मिक परिस्थितियाँ

- वैदिक और पौराणिक धर्मों का अनेक रूप धारण करना।
- बौद्ध धर्म के अनेक रूप जैसे – महायान, वज्रयान, सहजयान, मन्त्रयान आदि।
- ब्राह्मण धर्म के दो वर्ग – उत्तर भारत में शैव धर्म और दक्षिण भारत में **वैष्णव** धर्म।
- भांकराचार्य, रामानुजाचार्य और निम्बार्काचार्य द्वारा अपने–अपने सिद्धान्तों का प्रचार, परिणामस्वरूप धार्मिक वातावरण **दूषित**।
- सिद्धों द्वारा सिद्धि–लाभ के लिए गुप्त क्रियाएँ करना।
- नाथ – सम्प्रदाय की कठोर साधना जनसाधारण के लिए अग्राह्य।

सामजिक परिस्थितियाँ

- ब्राह्मण धर्म की **प्रतिष्ठा** से वर्णाश्रम का महत्त्व बढ़ना।
- जाति गुणों एवं कर्मों के आधार पर न होकर वर्ण के आधार पर।
- एक जाति की अनेक जातियाँ।
- छुआछूत के नियम कठोर।
- दास प्रथा का प्रचलन।
- समाज के दो वर्ग – उच्चवर्ग एवं निम्नवर्ग।
- उच्चवर्ग द्वारा निम्नवर्ग का शोशण।

साहित्यिक परिस्थितियाँ

- तीन प्रकार का साहित्य –

1. धर्माश्रित साहित्य – जैनों, बौद्धों, नाथों और सिद्धों का साहित्य।
2. राजाश्रित साहित्य – सामन्ती ग्रन्थ और रासो ग्रन्थ।
3. लौकिक साहित्य – संदेशरासक, पउमचरिउ, भविष्यतकथा आदि।
4. चारण और भाटों द्वारा प्रशस्तिपरक साहित्य की रचना।

- मुद्रण कला का आविष्कार न होने से साहित्य का जनता से बहुत कम सम्पर्क।
- धर्म, दर्शन, ज्योतिष, कर्मकाण्ड आदि पर संस्कृत में प्रामाणिक ग्रन्थों की रचना।
- संस्कृत साहित्य में वृद्धि।
- आपभ्रंश में बौद्धों, नाथों तथा जैन मुनियों द्वारा धार्मिक साहित्य की रचना।

Thank You